राज्य अध्याय 25

1	**प्रार्थना करें**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके द्वारा मार्ग दर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य को उपदेश देने के विषय में इस पाठ कों प्रभु के हाथों में सौंपें।

2	**साझा करें** (20 मिनट) *(शांत समय)* **भजन संहिता 84,90,91 और 92**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 84,90,91 और 92) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) *(परमेश्वर की महानता)* **(1) यशायाह 40:25-26**

स्मरण वचन की ग्यारवी श्रृंखला (ञ) "परमेश्वर की भलाई" से सम्बन्धित है। पांच स्मरण पदों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:

(1) परमेश्वर अतुल्य हैं। यशायाह 40:25-26।
(2) परमेश्वर महिमामय हैं। 1इतिहास 29:11।
(3) परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं। इफिसियों 1:11-12
(4) परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं। इब्रानियों 4:13
(5) परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं। यिर्मयाह 32:17।

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(1) परमेश्वर अतुल्य है। यशायाह 40:25-26। इसलिये तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उस के तुल्य ठहरूं? उस पवित्र का यही वचन है। अपनी आँखें उठाकर देखो, किस ने इन को सिरजा? वह इन गणों को गिन-गिनकर निकालता, उन सबको नाम ले लेकर बुलाता है? वह समार्थी और अत्यन्त बलवन्त है कि उसमें से कोई बिना आए नहीं रहता।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टांत)* **अन्धे द्वारा अन्धे का रास्ता दिखाया जाना और बुद्धिमान और मूर्ख द्वारा घर का बनाया जाना**

मत्ती 15:14 में "अन्धे द्वारा अन्धे को रास्ता दिखाने का दृष्टान्त"
और मत्ती 7:24-27 में बुद्धिमान और मूर्ख द्वारा घर का बनाया जाना
परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का आज्ञापालन करना

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य जीवन की कहानी या चित्रण है जो आत्मिक सत्य को सिखाती है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीनीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए आम जगह और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम दृष्टान्तों का अध्ययन करने के लिए छह दिशा–निर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टान्त का अध्ययन करेंगे (नियमावली 9 में परिशिष्ट 1 देखें)

क. "अन्धे द्वारा अन्धे को रास्ता दिखाने का दृष्टान्त"

पढ़ें मत्ती 15:1–20 और लूका 6:39–42।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

एक मार्गदर्शक यह देखने में सक्षम होना चाहिए कि वह स्वयं कहां जा रहा है और वह दूसरे को कहां ले जा रहा है। अन्यथा उसे एक मार्गदर्शन कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। "एक अंधा मार्गदर्शक" एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो मार्गदर्शक होने का दावा तो करता है लेकिन सारे लोगों को नाश के गडहे की ओर ले जाता है।

---

2. सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) यह दृष्टान्त हमें मत्ती 15:1–12 में मिलता है।

लेकिन यह गद्यांश मानवीय परम्पराओं और परमेश्वर के वचन के साथ उनके रिश्ते को लेकर अति महत्वपूर्ण है। हम "प्राचीनों की परम्परा" के विकास, प्राचीनों के विकास पर यीशु के विचारों और उन लोगों के बारे में यीशु के विचारों पर चर्चा करेंगें जिन्होंने प्राचीनों की परम्परा को बढ़ावा दिया।

प्राचीनों की परम्परा का विकास। "प्राचीनों की परम्पराओं" के अन्तर्गत पुराने नियम की व्यवस्थाओं के अभिप्राय और विशेष तौर पर विभिन्न परिस्थितियों में इन नियमों के पालन करने के क्षेत्र में मनुष्यों के विचार और उनके संकल्प आते हैं। प्राचीन काल में इन विचारों और रीतियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया गया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यहूदियों ने इन नियमों और परम्पराओं को परमेश्वर की व्यवस्था के तुल्य माना, क्योंकि व्यवस्था के शिक्षक होने के नाते ये परम्पराएं दिखाती थीं कि परमेश्वर की व्यवस्था का अर्थ क्या था और उनका दैनिक जीवन में किस तरह से पालन होना चाहिए।

बहुत से मामलों में, ये विचार और निर्णय परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को भी पीछे छोड़ गये। उदाहरण के तौर पर मत्ती 12:1-8 के अनुसार परम्परा यह सिखाती है कि सबत के दिन कोई भी जन अनाज नहीं बीन सकता (क्योंकि ऐसा करना "सबत के दिन काम करना गिना जाएगा")। और अन्य कई मामलों में परम्पराएं परमेश्वर की व्यवस्था की मांग के साथ न्याय करने में पूरी तरह से असफल हो गयीं। उदाहरण के लिए, मत्ती 5:20-48 के अनुसार, परम्परा सिखाती है कि बाहरी तौर पर दस आज्ञाओं को मानना ही पर्याप्त होगा। मत्ती 15:1-2 में शुद्धता की रीति के अभ्यास करने की मांग एक ऐसा मामला है जिसमें पुरनियों की रीति व्यवस्था में लिखी बातों से भी अधिक मांग कर रही थी। परमेश्वर की व्यवस्था "पवित्रता" की मांग कर रही थी (लैव्यव्यवस्था 19:2) और ऐसी पवित्रता के लिए आन्तरिक पवित्रता की आवश्यकता होती है जो हम नैतिक आचरण और रीति रिवाजों में बाहरी तौर पर प्रगट होती है।

उदाहरण के लिएः परमेश्वर के सिनै पर्वत पर उतरने से पहले लोगों को अपने कपड़े धोने थे (निर्गमन 19:10-11)। विभिन्न प्रकार की पवित्र रीतियों को निभाने से पहले याजकों के लिए स्नान करना अनिवार्य था (लैव्यव्यवस्था 15:1-33; 16:26,28; 17:15-16)। तम्बू में अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने से पहले हारून और उसके पुत्रों को अपने हाथों को धोना अनिवार्य था (निर्गमन 30:17-21)। कुछ विशेष परिस्थितियों में परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार आम लोगों को भी अपने हाथों को धोना अनिवार्य था। (लैव्यव्यवस्था 15:11; व्यवस्थाविवरण 21:6) लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था में ऐसा कहीं पर भी नहीं लिखा गया है कि हर एक जन के हर बार भोजन करते समय अपने हाथों को धोया अनिवार्य है! यह नियम पुरनियों का अपना बनाया नियम था, लेकिन परमेश्वर के वचन में ऐसा करने का कोई आदेश नहीं दिया गया था। लेकिन, फरीसियों ने हर बार भोजन करने से पहले अपने हाथों को धोने पर बल दिया(मरकुस 7:3-4)। ऐसी बातें, जिनके बारे में परमेश्वर की व्यवस्था अर्थात बाइबल में कहीं पर बल नहीं दिया गया उन्हीं बातों पर इन लोगों के द्वारा इस हद तक बल दिया गया कि व्यवस्था का अभिप्राय पूरी तरह से समाप्त हो गया।

<u>प्राचीनों की इन रीतियों को उदय इस्राएल के इतिहास में किस प्रकार हुआ?</u> ई.पू 586 में यरूशलेम और मन्दिर के विनाश और बेबिलोन की बन्धुवाई ने यहूदियों को बुरी तरह से हिला कर रख दिया। बेबीलोन में बन्धुवाई की गणना निम्नलिखित तरीके से की जाती हैः

- 605 ई.पू में नबूकदनेस्सर द्वारा पहली बार चढ़ाई करके निर्वासन में निर्वासित किये जाने से लेकर 537 ई.पू में पहली बार लोगों के वापस आने तक।
- या 586 ई.पू में मन्दिर के नष्ट किये जाने से लेकर 516 ई.पू में मन्दिर के पुनः निर्माण तक।

परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों ने इस बात को समझ लिया था कि गुलामी में जाना परमेश्वर की ओर से दण्ड था, क्योंकि इस्राएल के लोगों ने अपने परमेश्वर को त्याग दिया था। उन्हें पता चल गया था कि उनके पुनः मेल व बहाली की आशा केवल अपने पूरे मन से परमेश्वर के पास लौटने पर ही टिकी हुई है (यिर्मयाह 29:13-14)। उन्होंने यह विश्वास और आशा की कि यदि वे परमेश्वर द्वारा बाइबल की पहली पांच पुस्तकों में प्रगट की गयी परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करेगें, तो उन पर एक बार फिर से परमेश्वर का अनुग्रह हो जाएगा।

- बन्धुवाई के समय में, यहेजकेल और दानिय्येल भविष्यद्वक्ता ने लोगों की अगुवाई की।
- बन्धुवाई के बाद में, शास्त्री एज्रा और भविष्यद्वक्ता हाग्गै, जर्कयाह और मलाकी ने अगुवाई की।

नयी परिस्थितियों में परमेश्वर की व्यवस्था के पालन के नये तरीकों की जरूरत पड़ी।
कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक ठाक चला। लेकिन, जल्द ही उनके बीच में एक "फरीसी" (अर्थात "जिन्होंने अपने को अलग कर लिया हो") नामक समूह उठ खड़ा हुआ। उन्होंने खुद को विशेष ठहराते हुए परमेश्वर

के वचनों पर आधारित तथाकथित नियमों का प्रचार और प्रसार किया। वे नये नये नियमों के बारे में विचार करने में इतने मगन हो गये कि केवल हुकुमत करने के लिए नये नये नियमों को बनाने लगे। उन लोगों के बीच में सबसे प्रसिद्ध रब्बी या गुरू को सर्वश्रेष्ठ सम्मान दिया जाने लगा। जो कुछ इन रब्बियों ने कहा था उसे ही पीढ़ियों से पीढ़ीयों तक आगे बढ़ा दिया गया। आराधनालयों से जुड़े हुए इन व्यवस्थापकों ने बच्चों को पढ़ना सिखाया और सिखाया था कि बीते समय के रब्बियों ने व्यवस्था का क्या अर्थ बताया था। मत्ती 5:21 में इन्हें "पूर्वकाल के लोग कहकर" सम्बोधित किया गया है, उनके सिखाने का तरीका यह था कि विद्यार्थियों को रब्बियों को बातों को याद करके सम्पूर्ण जीवनकाल तक उसे ही दोहराते रहना होता था। विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों के पीछे पीछे दोहराना होता था। याद करने वाली सामग्री में प्रतिवर्ष बढ़ौत्तरी होती ही चली गयी, यह बोझ इतना भारी हो गया कि 200 ई.प. रब्बी जेहूदा ने "प्राचीनों की परम्पराओं" को एक लिखित रूप प्रदान किया जिसे "मिश्ना" (इस शब्द का अर्थ "दोहराव करना") के नाम से जाना जाता है। उसके बाद में मिश्ना को समझाया जाना और आगे बढ़ाना भी ज़रूरी था। मिश्ना पर लिखी गयी टिका को "गेमारा" (इस शब्द का अर्थः "पूरा करना ") के नाम से जाना जाता था। मिश्ना और गेमारा को साथ में मिलाकर "ताल्मुद" (जिस शब्द सीखना था) का उदय हुआ। यरूशलेम में रब्बियों द्वारा संचालित पाठशालाओं ने "यरूशलेम ताल्मुद" का उत्पादन किया और बेबीलोन में रब्बियों द्वारा संचालित पाठशालाओं ने "बेबीलोनियन ताल्मुद" का उत्पादन किया। ये दोनो बहुत प्रचलित पुस्तकें हैं। बेबीलोनियन ताल्मुद में यरूशलेम ताल्मुद से ज़्यादा सामग्री पायी जाती है और उस ज़्यादा आधिकारिक माना जाता है।

यीशु प्राचीनों की रीतियों के बारे में क्या कहते हैं। फरीसियों ने निरन्तर पुरनियों अर्थात प्राचीनों की परम्परा को प्रोत्साहित किया। मत्ती 15 अध्याय में, यरूशलेम में कुछ फरीसियों और कुछ व्यवस्थापकों को उनके सहकर्मियों के द्वारा यीशु की सेवकाई को रोकने के ठहराया गया था। उन्होंने इस बात को देख लिया कि यीशु के चेले प्राचीनों की रीतियों पर नहीं चलते थे, क्योंकि वे उस तरीके से अपने हाथ नहीं धोया करते थे जिस तरीके से फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक धोया करते थे।

प्राचीनों की रीतियों में केवल *बाहरी कार्येकलापों* पर ही ध्यान दिया जाता था। उसका सरोकार आधुनिक साफ सफाई से नहीं था, लेकिन उनका मतलब केवल रीतियों की शुद्धता से था। उनकी मांग थी कि भोजन करने से पहले लोगों को, परम्परागत तरीके से अपने हाथों को साफ कर लेना चाहिए। हो सकता है कि बाज़ार में उनका सम्पर्क अन्यजातियों के लोगों से हुआ होगा, जिन्हें वे अशुद्ध (तुलना करें प्रेरितों. 10:28 से) लोग मानते हैं। रीति के हिसाब से हाथ धोने का तरीका निम्नलिखित थोः वे अपने एक हाथ में पानी लेकर उसे ऊंचाई से दूसरे हाथ पर उण्डेला करते थे। या फिर कोई और व्यक्ति दूसरे जन के हाथों पर पानी को उण्डेला करता था (2राजोओं 3:11) जबकि वह अपनी मुट्ठी को दूसरे हाथ में रखकर घुमा(मरकुस 7:3) (ग्रीकःपुगमनीपोन्टई)। अतः फरीसियों, व्यवस्थापकों और उनके अनुयायियों ने प्राचीनों की सच्ची भक्ति और प्राचीनों के रीति रिवाजों को हृदय के भीतरी स्वभाव को अनुयायियों के लिए विकल्प बना दिया था।

यीशु ने कहा कि फरीसियों की नज़रों में उसके चेलों ने प्राचीनों की परम्पराओं का उल्लंघन किया था, लेकिन फरीसियों ने तो परमेश्वर के वचनों को उल्लघंन किया था। उसने धार्मिक अगुवों पर यह कहते हुए दोष लगाया कि तुम ने मनुष्यों की रीतियों को परमेश्वर का वचन करके सिखाया है! उन्होंने मनुष्यों की बनायी गयी रीति को परमेश्वर के वचनों से ज्यादा महत्व दिया है।

एक उदारहरण के तौर पर, यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि वे किस प्रकार अपने माता पिता का समर्थन न करके उनका अनादर करते हैं। यदि बच्चे अपने माता पिता की जरूरतों की चीज़ों को उन्हें नहीं देना चाहते हैं तो *वे कहते हैंः* "मेरी कमाई परमेश्वर के लिए भेंट या दान हैं"। फरीसियों के अनुसार, उनका यह कहना ही उन्हें अपने माता पिता का ख्याल रखने की ज़िम्मेदारी से बचा लेता है। इस तरीके से अपने सारे पैसों

को अपने पास संभाल कर रख लेते हैं। प्राचीनों की रीतियों परमेश्वर के द्वारा दी गयी आज्ञाओं के बिल्कुल विपरीत हैंः "अपने माता पिता का आदर करें" (निर्गमन 20:12)। इसीलिए यीशु ने कहा, "तुम ने अपनी रीतियों के कारण परमेश्वर के वचनों को व्यर्थ और अप्रभावशाली बना दिया है। जब यशायाह ने तुम्हारे बारे में भविष्यवाणी की तो ठीक ही कीः "ले लोग अपने होठों से तो मेरा आदर करते हैं लेकिन इनके हृदय मुझसे बहुत दूर हैं। वे व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं; उनके वचन केवल मनुष्यों द्वारा सिखाएं गये नियम हैं (निर्गमन 15:6-9)। यीशु ने उनकी परम्पराओं को परमेश्वर के नहीं वरन मनुष्यों के विचार और शिक्षाएं हैं! मनुष्यों का हर एक विचार, शिक्षा और अनुप्रयोग परमेश्वर के वचनों के द्वारा परखे जाने चाहिए और उन्हें परमेश्वर के वचनों के अधीन होना चाहिए।

जो लोग प्राचीनों की परम्पराओं को बढ़ावा देते हैं यीशु उनके बारे में क्या कहते हैं। यीशु फरीसियों को "कपटियों" कहते हुए सम्बोधित करते हैं। वे अपने आप को धर्मपरायण और भक्त दिखाने का प्रयास करते हैं, लेकिन वास्तव में वे कपटी हैं। परमेश्वर का आदर करना उनके लिए केवल एक दिखावा है (मत्ती 6:5; लूका 18:11)। लेकिन भीतर से वे भ्रष्ट थे और उनके हृदय जीवित परमेश्वर से बहुत दूर थे। यीशु कहते हैं कि ऐसे लोगों द्वारा धार्मिक नियमों (व्यवस्थाओं) द्वारा की जाने वाली परमेश्वर की आराधना पूरी तरह से व्यर्थ होती है।

फिर, यीशु उन फरीसियों और व्यवस्थाओं से दूर हुए और उन्होंने लोगों को अपने पास बुलाया। उसने उनसे कहा "जो चीज़ें मनुष्य के मुंह से उसके भीतर जाती हैं वह उसे *अशुद्ध* नहीं करती वरन वे बातें जो उसके मुंह से निकली हैं वही उसे अशुद्ध करती हैं। उसके बाद उसने अपने चेलों को बताया कि जो बातें मुंह से निकलती हैं, वे उसके मन ही से निकलती है और उसे अशुद्ध बनाती है। मनुष्य के साथ समस्या उसका बाहरी प्रदूषण नहीं, वरन उसका आन्तरिक प्रदूषण था। और उनके मन में भरी गन्दगी ही उन में से होकर बाहर निकलती हैं। जो कुछ मनुष्य के मन में बसा होता है वह ही उसके मुंह से बाहर आता है और सब प्रकार के पाप को जन्म देता है। मनुष्य के मन से बुरे विचार और दुष्ट युक्तियां उत्पन्न होती है और ये दुष्ट युक्तियां उनके अपशब्दों और कामों में प्रगट होते हैं।

इस तरह से यीशु मसीह ने फरीसियों को "कपटियों" और "वचन का उल्लंघन करने वाले" कहा। ये धार्मिक अगुवे "परमेश्वर की व्यवस्था के शिक्षक" होने का दावा किया करते थे लेकिन वे वास्तव में "मानवीय परम्पराओं व रीतियों को बढ़ावा देने वाले थे"! क्योंकि यीशु ने परमेश्वर के वचन को धार्मिक अगुवों और शिक्षकों की रीतियों से ज्यादा मान दिया, इसलिए उनका प्रभाव लोगों पर से खत्म हो गया। यह भी एक कारण था कि उन्होंने यीश की हत्या करने का षड़यन्त्र किया।
परमेश्वर के लागों को निम्न रूपकों के रूप में माना जाता हैः

- "लदा हुआ पेड़" (भजन. 1:3; 92:12)
- "परमेश्वर की दाख की बारी" (यशायाह 5:7)
- "सींचा हुआ बगीचा"
- "परमेश्वर का खेत" (1कुरिन्थियों 3:9)

इस प्रकार के पौधे केवल तभी बढ़ और फल सकते हैं जब उनका बोने वाला स्वयं परमेश्वर हो (यूहन्ना 3:3-8; 6:44)!

इसके अलावा, बहुत से ऐसे पौधे हैं जिन्हें परमेश्वर ने नहीं बोया है, उदारहरण के लिए, "अनाज के बीच में जंगली पौधे" (मत्ती 13:25-39)। यीशु ने फरीसियों को नया जन्म पाये हुए लोगों के रूप में ग्रहण नहीं किया। उसने कहा, "हर वह पौधा जिसे मेरे पिता ने नहीं बोया है वह जड़ से उखाड़ा जाएगा।" (मत्ती 15:13)

हर एक पेड़ जिसे बाइबल के परमेश्वर ने नहीं बोया है, उसे उखाड़कर नरक की आग में डाल दिया जाएगा (मत्ती 3:10-12; 13:42; यूहन्ना 15:5-6; यहूदा 12)। यह कार्य अन्तिम न्याय के समय में जरूर होगा। इस बीच में, लोग पेड़ को उसके फलों से जान लेगें (मत्ती 7:15-20) या दाखलता को उसके फलों से पहिचान लेगें (यूहन्ना 15:4-6)। यीशु ने यहूदी अगुवों को "अन्धे मार्गदर्शक कहा"। इस मौके पर यीशु मसीह ने "अन्धे के द्वारा अन्धे की अगुवाई के दृष्टान्त" के बारे में बताया।

(2) यह दृष्टान्त (मत्ती 15:14) में पाया जाता है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या (मत्ती 13:15-20) में पायी जाती है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। *यीशु ने " कपटियों" की तुलना फरीसियों से और व्यवस्थापकों की तुलना " अन्धे मार्गदर्शको" के साथ की। यह उल्लेख निश्चय तौर पर आवश्यक और प्रासंगिक है।*

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 15:14 में अन्धे द्वारा अन्धे को मार्ग दिखाये जाने का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का पालन करने" के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्न हैः परमेश्वर के वचन की बजाय किसी अन्धे अगुवे का अनुसरण करना जो मानवीय रीतियों पर निर्भर होता है (अर्थात बाइबल या व्यवस्था की बातों के परम्परागत अर्थ, विश्वास के परम्परागत अंगीकार, कलीसिया के क्रम व नियमों पर) वह विनाश की ओर अगुवाई करेगा।

परमेश्वर के वचनों को जानना, समझना, और आज्ञापालन करना परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषताएं हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों की आखों पवित्र आत्मा के द्वारा आत्मिक शिक्षाओं को देखने के लिए खुली होती हैं (1यूहन्ना 2:26-27)। लेकिन जितने लोगों को बाइबल के परमेश्वर ने नहीं लगाया है, (अर्थात, जिन लोगों ने नया जन्म नहीं पाया होता है) वे आत्मिक अंधे बने रहते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजे व चर्चा करें। बाइबल के इन अनुच्छेदों द्वारा जो शिक्षा मिलती है उसकी तुलना इस दृष्टान्त से किस प्रकार की जा सकती है?

(1) फरीसियों का अन्धापन।

पढ़ें यूहन्ना 9:35-41; रोमियों 2:17-24। यीशु ने जन्म के अन्धे की आंखों की रौशनी वापस करने के बाद उसकी आत्मिक आंखें भी खोल दीं। वह व्यक्ति केवल शारीरिक वास्तविकता को ही नहीं वरन आत्मिक वास्तविकता को भी देख सका! उसने यीशु का मसीह और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। और उसने यीशु मसीह पर विश्वास किया और उसकी आराधना की।

फरीसी लोग, भले ही आत्मिक सत्यों को समझने का दावा किया करते थे, लेकिन वास्तव में वे आत्मिक तौर पर अन्धे थे। उन्होंने यीशु को मसीह और जगत के उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया। और इसी के परिणाम स्वरूप उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करने की बजाय उसका विरोध किया। इसलिए यीशु ने कहा, "मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूं, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं।(यूहन्ना 9:39)। फरीसियों को अन्धापन आत्मिक था।

फरीसियों के समान कपटियों का अन्धापन खुद को दिये जाने वाले दण्ड के समान है, क्योंकि वे लगातार खुद अपन मन को परमेश्वर के वचन के प्रति अर्थात बाइबल के प्रति कठोर कर लेते हैं। यदि कोई जन अपने आप को बाइबल के परमेश्वर और बाइबल के प्रति कठोर कर लेता है, तो उसके लिए ऐसा दिन आएगा जब उसका ह्रदय पूरी तरह से कठोर हो जाएगा, जिससे वह कभी न तो परमेश्वर के वचनों को समझ पाएगा और न ही पश्चाताप करके उद्धार पा सकेगा (मत्ती 13:11-15; यूहन्ना 3:19-20)!

कपटियों का अन्धापन फरीसियों के समान अपने आप को धोखा देना है। अपने अन्धेपन में वे अपने आप को लोगों के अगुवे मानते और सोचते हैं कि केवल वे ही आत्मिक वास्तविकता को देख सकते हैं (यूहन्ना 7:47-49; रोमियों 2:17-24)!

(2) आंख में लट्ठा।

पढ़ें लूका 6:39-42। यीशु ने कहा, "क्या अन्धा, अन्धे को मार्ग बता सकता है? क्या दोनों गड्ढे में नहीं गिरेंगे?.... पहले, अपनी आंख का लट्ठा निकाल ले तब तू ठीक ठीक अपने भाई के तिनके को निकाल सकेगा।" यदि कोइ जन दूसरों के लिए आत्मिक अगुवा बनना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह पहले आत्मा में जन्मे और बदल जाए। उसे सबसे पहले परमेश्वर को उसके जीवन के कपट, वचन के प्रति आज्ञा उल्लंघन और व्यक्तिगत पापों से व्यवहार करने के लिए अनुमति प्रदान करनी चाहिए। केवल आत्मिक सत्यों को देखने के लिए परमेश्वर द्वारा उसकी आंखों को खोलने के और परमेश्वर को उसके आन्तरिक जीवन को परिवर्तित करने के बाद ही वह किसी दूसरे जन की मदद करने के योग्य हो पाएगा।

ख. घर बनाने वाले बुद्धिमान और मूर्ख का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 7:15-27 और लूका 6:43-49।

1. <u>दृष्टान्त की कहानी को समझें।</u>

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

इस कहानी में तीन भाग शामिल हैं:

जिस तरीके से इन दो निर्माताओं ने अपने अपने घरों को बनाया। दो लोगों ने अपने अपने घरों को बनाया। दो लोगों ने अपना घर बनाया। जिस तरह के घरों में यीशु ने उल्लेख किया था वह उनका निर्माण आज के निर्माण के मानकों के अनुसार मजबूत नहीं हुआ है। चोर दीवार के माध्यम से खुदाई करने में सक्षम थे (मत्ती 6:19)! घर की छत लकडी के खम्बो से बनायीं जाती थी जिसमे मिट्टी और घाँस भरते थे और ये आसानी से तोड़े जा सकते थे (मरकुस 2:4; भजन. 129:6)। इसलिए सब कुछ घर की नीव पर निर्भर करता था।

इन दोनों निर्माणकर्ताओं ने एक घाटी में अपने घर बनाया जिसके तल पर जलकुंड था। शुष्क मौसम के दौरान यह नदी सूख जाती है या लगभग सूख जाती है, जिसके परिणामस्वरूप यह इन घरों को नुकसान नहीं पहुंचा सकती है। पहला निर्माणकर्ता बुद्धिमान, समझदार है, और *भविष्य के बारे में सोचता है।* वह इस तथ्य से सहमत है कि शुष्क मौसम के बाद, गीला मौसम आ जाएगा। इसलिए वह साल के हर मौसम में खड़े रहने के लिए अपना घर बनाता है। वह रेत या ढीली बजरी को हटा देता है और चट्टान के तल तक जाता है (लूका 6:48)। तब वह इस चट्टान के तल पर अपने घर की नींव खोदता है। दूसरा निर्माणकर्ता मूर्ख है, *क्योंकि वह यह नहीं सोचता है कि भविष्य में क्या होगा।* वह रेत या ढीली बजरी की परत पर अपने घर का निर्माण करता है, जो तली की चट्टान पर विभिन्न मोटाई में स्थित है।

उनके घरों का परीक्षण किया जाता है। बारिश के मौसम के दौरान, पश्चिम में भूमध्य सागर से आंधी चलने पर तेज हवा चलती है। तेज हवाओं के साथ, बादल छाए हुए हैं और घाटी में नदी के जल स्तर में तेजी से वृद्धि होती है। दीवारों के खिलाफ तेज हवाएं चलती हैं और पानी नींव से दूर रेत और बजरी को बहा देता है।

परीक्षण का परिणाम और इस परिणाम का कारण। पानी पहले घर की नींव को खोखला नहीं कर सकता, क्योंकि इसकी नींव चट्टान पर बनी है। लेकिन यह दूसरे घर की नींव के नीचे रेत और बजरी को तेजी से साफ कर देता है। हालांकि तेज हवाएं चट्टान पर बने घर की दीवारों को घेर लेती हैं, लेकिन यह इसे गिरा नहीं सकती, क्योंकि मजबूत नींव इसे बनाए रखती है। लेकिन दूसरे घर की दीवारें तुरंत पानी की धार में गिर जाती हैं और पूरा घर पूरी तरह से बह जाता है!

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) **यह दृष्टांत मत्ती अध्याय 5 और 7 में पाया जाता है, पर्वत पर उपदेश। इसके चार भाग हैं। व्यापक और संकरे तरीके के बीच अंतर।** मत्ती 5:1-16 में यीशु परमेश्वर के राज्य की धार्मिकता का वर्णन करते है। परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के अनुसार जीना लोगों को परमेश्वर की दृष्टि में धन्य बनाता है। परमेश्वर के राज्य के नागरिक पृथ्वी के नमक हैं जो क्षय को दूर रखते हैं, घावों को ठीक करते हैं और हर चीज को स्वाद देते हैं। वे इस दुनिया के अंधेरे में रोशनी के रूप में हैं। यीशु समझाते हैं कि दस आज्ञाएँ कानूनों के लिए केवल बाहरी आज्ञाकारिता से अधिक हैं (दंड कानून के साथ प्रतिरूपण)। यीशु अपने प्रायश्चित के बलिदान के माध्यम से धार्मिकता प्रदान करते है और धार्मिकता की माँग करता है कि कैसे परमेश्वर के

राज्य के नागरिकों को जीना चाहिए।

अंत में वह लोगों को संकरे द्वार के माध्यम से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करता है (मत्ती 7:क13-14)! वह भविष्यद्वक्ताओं और धर्मों के खिलाफ चेतावनी देता है जो केवल बाहरी धार्मिकता सिखाते हैं (मत्ती 7: 15 - 20) या जिनके पास यीशु मसीह के बिना एक धर्म है (मत्ती 7: 21 - 27)!

झूठे नबियों और सच्चे नबियों के बीच अंतर। मत्ती 7:15-20 में यीशु सिखाते है कि झूठे भविष्यद्वक्ता क्या करते हैं। बाइबिल के परमेश्वर द्वारा एक झूठा नबी नहीं भेजा जाता है। वह अपना संदेश लाता है और लोगों को बताता है कि वे क्या सुनना पसंद करते हैं? (यशायाह 30:10; यिर्मयाह 23:9-32; 2तीमुथियुस 4:3-4)! वह ऐसा दिखता है कि यह परमेश्वर द्वारा भेजा गया है और दावा करता है कि वहय सच बोलता है।

लोग उस नबी को उसके झूठे फलो से पहचानने में सक्षम होंगे (मत्ती 7:15-20), वो कैसे रहता है रू विशेष रूप से वह कैसे लोगों को मारता है (क्रोध में) (मत्ती 5:21-26), वह महिलाओ को कैसे देखता है (मत्ती 5:27-30), वह तलाक को कैसे देखता है (मत्ती 5:31-32), वह कैसे झूट बोलता है और अपना संदेश बदलता रहता है (मत्ती 5:33-37), वह कैसे बदला लेता है (तथाकथित पवित्र युद्धों के माध्यम से) (मत्ती 5:38-42) और कैसे वह अपने दुश्मनों से नफरत करता है (मत्ती 5:43-48)!

सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की धार्मिकता फारसी के रूप में धार्मिक पाखंडियों की तुलना में अधिक है (मत्ती 5:20, 47)!

बात करने वालों और कर्ता के बीच का अंतर। मत्ती 7:21-23 में यीशु दुनिया के धर्मों में ढोंगियों के खिलाफ परमेश्वर के राज्य के नागरिकों को चेतावनी देता है। एक बात करने वाला ऐसा बोलता है जैसे कि वह परमेश्वर को जानता है, लेकिन वह बाइबल के परमेश्वर की इच्छा को नहीं करता है। वह नाममात्र का मसीही है और फिर से जन्मा हुआ मसीही नहीं है (यहुन्ना 3:7)! यीशु इस बात से इनकार नहीं करता कि गैर-मसीही परमेश्वर के अनुज्ञा के कारण कुछ चमत्कार कर सकते हैं। (उदाहरण के लिए मत्ती 10:1 में; यहूदा इस्करियोती) या शैतान की शक्ति के द्वारा (2थिस्सलुकिनियों 2:9-10) या चालबाजी और भ्रम के माध्यम से जो लोग धोखा देने के लिए बनाते हैं)। इन लोगों की निंदा करने का कारण यह है कि ऐसा नहीं है कि उनका उपदेश गलत था या उनके चमत्कार सहज थे, लेकिन क्योंकि उन्होंने उसका अभ्यास नहीं किया था जो उन्होंने प्रचार किया था (मत्ती 23:3)! कर्ता एक व्यक्ति है जो कहता है और वह करता है जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है। वह सत्य का उपदेश करता है और जिस सत्य का उपदेश करता है, उसका अभ्यास करता है। एक सच्चे कर्ता को उसके जीवन से जाना जाता है!

कर्ता और श्रोताओं के बीच अंतर। 7:24-27 में यीशु मूर्ख लोगों के खिलाफ परमेश्वर के राज्य के नागरिकों को चेतावनी देते है। एक मूर्ख व्यक्ति सुनता है कि यीशु क्या सिखाता है, लेकिन इसे व्यवहार में नहीं लाता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा यीशु की शिक्षाओं को व्यवहार में लाता है।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 14:13-14 में उपदेश के रूप में समाहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग वास्तव में इस उपदेश में निहित है।

यीशु मसीह ने चट्टान पर निर्माण करने को यीशु के शब्दों को व्यवहार में लाने के लिए व्याख्या की। ये शब्द पर्वत पर उपदेश में (मत्ती 5:5-7) और बाइबल के बाकी हिस्सों में दर्ज हैं (तुलना करें मत्ती 28:19-20 से)!

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन-सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। कलीसिया के पिता में से एक, जिसे क्रिसस्टोम (347-407 A.D) ने कहा, जो लोग मसीह की शिक्षाओं का पालन करते हैं, उन्हें न केवल भविष्य में, बल्कि यहाँ और अब आशीष प्राप्त होगी। धर्मी का आशीर्वाद है कि उसके पास ताकत है, जिसे वर्तमान विरोधी नष्ट नहीं कर सकते है। वास्तव में अद्भुत बात यह है कि न सिर्फ अच्छे मौसम में, बल्कि विशेष रूप से हिंसक तूफानों (महान उथल-पुथल और नित्य प्रलोभनों) में धर्मी व्यक्ति को थोड़ा सा भी हिलाया नहीं जा सकता है।" क्राइसोस्टम ने कहा कि ''बारिश और बाढ़'' हमारे जीवन की सभी बीमारियों के लिए रूपक अभिव्यक्ति हैं जिनका कोई भी उल्लेख कर सकता है। मसीह की शिक्षाओं की दृढ़ता ''चट्टान'' है, जो मानव मामलों की सभी लेहरो से ऊपर है।

चट्टान और रेत। यीशु ने इस दृष्टांत में इन विवरणों की व्याख्या नहीं की है। इसलिए हमें इन विवरणों के अर्थ के बारे में अनुमान नहीं लगाना चाहिए। फिर भी, यीशु मसीह खुद को और अपनी इच्छा का खुलासा करा है कि वह क्या कहते है और क्या आज्ञा देते है। इसलिए, यह कहना निश्चित रूप से सही है कि, जहां तक बुद्धिमान और मूर्ख निर्माणकर्ताओं के दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ है, "चट्टान" स्वयं यीशु मसीह (और उनके शिक्षण शब्द) और ''रेत'' मानव अंतर्दृष्टि और विचार का प्रतिनिधित्व करता है।

चट्टान या रेत पर निर्माण। यीशु इन विवरणों की व्याख्या करते हैं और इसलिए वे अतिआवश्यक विवरण हैं। ''चट्टान पर निर्माण'' मसीह के शब्दों को व्यवहार में लाने का प्रतिनिधित्व करता है। हर कोई जो यीशु मसीह के शब्दों के अनुसार रहता है, यीशु मसीह पर अपने जीवन का निर्माण करता है! ''रेत पर निर्माण'' अपने आप में विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है, भविष्य के बारे में नहीं सोचता है और विशेष रूप से मसीह के शब्दों को व्यवहार में नहीं लाता है।

बारिश, लहरें और हवा। यीशु इन विवरणों की व्याख्या नहीं करते हैं। हालांकि, संदर्भ से यह स्पष्ट है कि वे ''परीक्षा'' का प्रतिनिधित्व करते हैं। परीक्षा झूठे नबियों के रूप में आ सकती है (मत्ती 7:15-20) या विभिन्न परीक्षा (उत्पत्ति 22, अब्राहम; अय्यूब 1-2), या प्रलोभन (उत्पत्ति 39, युसूफ) या शोक (उत्पत्ति 42:36; अय्यूब 1:18-22), या मृत्यु (प्रेरितों 7:59-60; 9:36-37) लेकिन यह विशेष रूप से अंतिम निर्णय में आएगा (मत्ती 24:42-44; 25:6, 31-33, 1थिस्सलुनीकियों 5:2)।

घर नहीं गिरा। यीशु इस बारे में विस्तार से नहीं बताते हैं। बाइबिल में यह आज्ञाकारी मसीही की जीत से जुड़ा है। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति जो अपने कर्मों से दिखाता है कि उसने यीशु के वचनों को अपने हृदय में धारण कर लिया है उसके जीवन को कभी भी शर्मसार नहीं करा जाएगा (1पतरस 2: 6)! यहां तक कि अंतिम निर्णय का दिन उसके लिए भयानक नहीं होगा, लेकिन इसके बजाय, वह विजय का दिन होगा (1थिस्सलुनीकियों 2:19-20; 3:13; 4:16-17; 2थिस्सलुनीकियों 1:7,10; 2तीमुथियुस 4:8; तीतुस 2:13-14)।

घर एक बड़ी टक्कर के साथ गिर गया। यीशु भी इस बारे में विस्तार से नहीं बताते हैं। बाइबल में यह अवज्ञाकारी लोगों की पूरी हार से जुड़ा है। प्रत्येक मूर्ख व्यक्ति, जो यीशु मसीह के वचनों को अस्वीकार करके अपनी मूर्खता दिखाता है, उसको न्याय के दिन अस्वीकार कर दिया जाएगा।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 15:14 में अन्धे द्वारा अन्धे को मार्ग दिखाये जाने का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का पालन करने" के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्न हैः परमेश्वर के वचन की बजाय किसी अन्धे अगुवे का अनुसरण करना जो मानवीय रीतियों पर निर्भर होता है (अर्थात बाइबल या व्यवस्था की बातों के परम्परागत अर्थ, विश्वास के परम्परागत अंगीकार, कलीसिया के क्रम व नियमों पर) वह विनाश की ओर अगुवाई करेगा।

जिस व्यक्ति ने रेत पर अपना घर बनाया था, उसने मसीह का वचन सुना, लेकिन फिर भी अपनी राय (अंतदृष्टि) और परंपराओं पर निर्भर था। वह व्यक्ति, जिसने चट्टान पर अपना घर बनाया था, मसीह की शिक्षाओं का पालन करके मसीह पर निर्भर था। प्रत्येक महत्वाकांक्षा, जो एक व्यक्ति सम्भाल के रखता है, हर योजना जो वह बनाता है, हर विचार वह जो सोचता है, हर शब्द जो वह बोलता है और हर काम जो वह करता है, जैसे कि यह उसके घर के निर्माण खंड थे। अच्छे निर्माण के खंडों को नीव अर्थात यीशु मसीह पर रखना चाहिए (1कुरिन्थियों 3:9-15), विशेषकर यीशु मसीह के शब्दों पालन करके (करने)।

मसीह और परमेश्वर के वचन का पालन परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपनी क्षमताओं या लोगों की राय और परंपराओं पर भरोसा नहीं करते हैं। उन्होंने अपना सारा विश्वास यीशु मसीह (परमेश्वर) में डाल दिया। वे न केवल परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, बल्कि उसे प्रचलन में भी रखते हैं!

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

खोजें और चर्चा करें। कैसे इन वाक्यांशों में से प्रत्येक कैसे सिखाता है उसकी तुलना में यह दृष्टान्त क्या सिखाता है ?

(1) परमेश्वर के शब्द की अस्वीकृति।

पढ़ें। भजन.118:22; नीतिवचन 1:20-33; यशायाह 5:24; 30:1-2; होशे 4:6; लूका 7:30)।

होशे 4:6, क्योंकि तुमने ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है, इसलिए मैं तुमको अपने पुरोहित के रूप में भी अस्वीकार करता हूं; क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर के व्यवस्था को अनदेखा किया है, इसलिए मैं तुम्हारे बच्चों को अनदेखा करूँगा।''

नीतिवचन 1:24-28 में परमेश्वर के वचन का ज्ञान कहता है, ''जब से तुमने मुझे अस्वीकार कर दिया जब मैंने तुम्हें बुलाया था और जब मैंने हाथ फैलाये तो तुमने ध्यान नहीं दिया, जबसे तुमने मेरी सलाह को अनसुना किया और मेरी फटकार को स्वीकार नहीं किया, उसके बदले में मैं जब तुमपर आपदा आएगी, मैं हसूँगा; जब तुम पर आपदा हावी हो जायगी तब मैं तुम्हारा उपहास करूँगा तब टीम मुझे पुकारोगे लेकिन मैं जवाब नहीं दूंगा।'' ये वाक्यांश चेतावनी देते हैं की कोई भी परमेश्वर के वचन को दूरगामी परिणाम के बिना अस्वीकार नहीं कर सकता है।

यशायाह 30:1-2 उन लोगों को चेतावनी देता है जो उन योजनाओं को अंजाम देते हैं जो परमेश्वर की योजनाएं नहीं हैं, जो परमेश्वर की आत्मा के बिना संबंध बनाते हैं और जो परमेश्वर की सलाह के बिना जीवन में एक दिशा का चुनते हैं।

(2) परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना।

पढ़ें मत्ती 4:4; लूका 8:15; 11:28; यूहन्ना 14:21,23। लूका 8:15 में अच्छी मिट्टी उन मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो एक महान और अच्छे दिल में परमेश्वर के वचन को बनाए रखते हैं और जो दृढ़ता से एक फसल का उत्पादन करते हैं। परमेश्वर के वचन का उद्देश्य मसीहियों के जीवन में फल देना है।

(3) चट्टान के रूप में मसीह।

पढ़ें यशायाह 28:16; रोमियों 9:33; 1कुरिन्थियों 3:11; 10:4; 1पतरस 2:6। 1पतरस 2:6 का कहना है कि यीशु मसीह एक चुना हुआ और कीमती आधारशिला है और जो उस पर भरोसा करता है, वह कभी शर्मसार नहीं होगा। और 1कुरिन्थियों 3:11 का कहना है कि यीशु मसीह ही मसीहियों के लिए एक और एकमात्र आधार है। ये दोनों मार्ग सिखाते हैं कि यीशु मसीह वह चट्टान है जिस पर मसीहियों को अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

ग. परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन के पालन के बारे में इन दृष्टान्तों के मुख्य शिक्षण या पाठ का सारांश

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन के पालन के बारे में इन दृष्टांतों के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *करना* या *करना* सिखाया? ***ध्यान दें।***

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर या यीशु मसीह किसकी तरह है।

यीशु मसीह वह चट्टान है जिस पर लोगों को अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए। जो कोई भी यीशु मसीह पर अपना जीवन का निर्माण करता है, वह कभी भी हिल नहीं पाएगा! यीशु मसीह अपनी शिक्षाओं के माध्यम से खुद को और अपनी इच्छा को प्रकट करता है। और यीशु मसीह की शिक्षाएँ बाइबल में दर्ज हैं। जो कोई भी मसीह की शिक्षाओं को व्यवहार में लाता है, वह यीशु मसीह पर अपने जीवन और अनन्त भाग्य का निर्माण कर रहा है। जो कोई भी अपने या किसी और पर अपने जीवन और अनन्त भाग्य का निर्माण करता है, वह निश्चित रूप से विफल हो जाएगा, क्योंकि प्रेरितों 4:12 का कहना है कि उद्धार यीशु के अलावा किसी अन्य व्यक्ति में नहीं है।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसकी तरह होना चाहिए।

मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वे यीशु मसीह, चट्टान पर अपने जीवन का निर्माण करें। जब वे अपने उपदेशों को व्यवहार में लाते हैं, तो मसीही यीशु मसीह, चट्टान पर अपने जीवन का निर्माण करते हैं। मसीह की शिक्षाओं को व्यवहार में लाना इतना आकर्षक क्यों है? यूहन्ना 14:21,23 में यीशु ने कहा, "जिस के पास मेरी आज्ञा है और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है उस से मेरा पिता प्रेम रखें, और मैं उस से प्रेम रखूं और अपने आप को उस प्रगट करूं। यदि कोई मुझसे प्रेम रखे तो मेरे वचन को मानें, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास और उसके साथ वास करेंगे।" मसीह की शिक्षाओं का पालन करने से, एक व्यक्ति को निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि परमेश्वर उससे प्यार करता है और उसे अनुभव होगा की परमेश्वर उससे प्यार करता है! मसीह की शिक्षाओं का पालन करने से, वह यीशु मसीह के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों में बढ़ेगा। मसीह खुद को अधिक से अधिक उसके सामने प्रकट करेगा और अपनी दिव्य उपस्थिति को महसूस कराएगा। यह आज्ञा मानने के लिए इतना अधिक नहीं है, लेकिन यह व्यक्तिगत रूप से मसीह को जानने और अपने प्रेम और एक दैनिक जीवन में उसकी उपस्थिति का अनुभव करने का ये महान आशीष है जो वास्तव में एक मसीही को मसीह की शिक्षाओं को मानने के लिए प्रेरित करता है!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

जो आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(सौंपा गया कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. <u>समर्पण</u>। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर"बोनेवाले के दृष्टांत" का <u>प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें</u>।
3. <u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय</u>। प्रतिदिन **भजन संहिता 101,103,104 व 107** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. <u>स्मरण करना</u>। **(2) परमेश्वर महिमामय हैः 1इतिहास 29:11.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. <u>बाइबल अध्ययन</u>। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 7:1-13।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. <u>प्रार्थना</u>। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी <u>नोटबुक का अद्यपन करें</u>। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।